भोपाल | गुरुवार | 5 नवंबर 2026 |

नव भारत

राष्ट्रहित का प्रहरी 1934 से



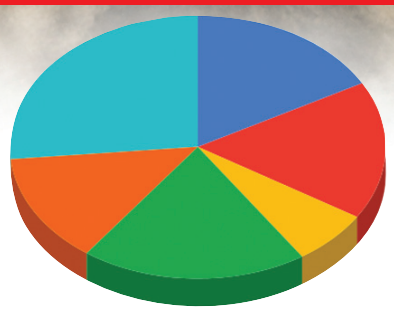
ट्रंप टैरिफट्रैप

महंगाई, प्रवासियों का गुस्सा, मनमाना ईरान युद्ध और तुगलकी टैरिफ ने बदल दिया अमेरिकी मिजाज

नवभारत न्यूज नेटवर्क

वॉशिंगटन, 4 नवंबर. अमेरिका के मध्यावधि चुनाव ने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के दूसरे कार्यकाल की राजनीतिक दिशा बदल दी है. जिस रिपब्लिकन पार्टी के साथ ट्रंप ने 2024 में व्हाइट हाउस के साथ संसद के दोनों सदनों पर भी नियंत्रण हासिल किया था, उसे दो साल के भीतर मतदाताओं ने विपक्ष की भूमिका में धकेल दिया है. डेमोक्रेट्स ने प्रतिनिधि सभा और सीनेट, दोनों में बहुमत हासिल कर लिया है. यह सिर्फ सीटों का फेरबदल नहीं, बल्कि ट्रंप की नीतियों, कामकाज के तरीके और अमेरिकी राजनीति में उनके प्रभाव पर मतदाताओं का फैसला है. डेमोक्रेट्स ने सीनेट में रिपब्लिकन पार्टी की छह सीटें छीन लीं. टेक्सास, साउथ कैरोलाइना, कंसास, आयोवा, ओहायो और नॉर्थ कैरोलाइना जैसे राज्यों में जीत ने चुनावी तस्वीर बदल दी. प्रतिनिधि सभा में भी डेमोक्रेट्स ने रिपब्लिकन बहुमत खत्म कर 218 सीटों का जरूरी आंकड़ा पार कर लिया. खास बात यह है कि इनमें कई ऐसे राज्य और निर्वाचन क्षेत्र हैं, जिन्हें रिपब्लिकन पार्टी अपना सुरक्षित गढ़ मानती रही है.

इसलिए बदला वोटर का मिजाज



- **48%** ने महंगाई को सबसे बड़ा चुनावी मुद्दा बताया.
- **48%** ने अपना वोट ट्रंप के विरोध में बताया.
- **49%** परिवारों ने आर्थिक स्थिति बिगड़ने की बात कही.
- **55%** ने ईरान युद्ध को मुकाबले अनुचित माना.
- **38%** रही ट्रंप की अप्रूवल रेटिंग.
- **75%** मतदाता देश की दिशा से असंतुष्ट या नाराज थे.

(**स्रोत**– एग्जिट पोल और इप्सोस सर्वे रिपोर्ट.)

इन्होंने रचा इतिहास

1. जॉर्जिया में **कीशा लांस बॉटम्स** पहली अश्वेत महिला गवर्नर चुनी गईं.
2. न्यू मैक्सिको में **डेब हालांड** पहली मूल अमेरिकी महिला गवर्नर बनीं.
3. न्यू हैम्पशायर से **क्रिस पप्पास** पहले समलैंगिक पुरुष सीनेट बने.
4. **अब्दुल अल-सय्यद** पहले मुस्लिम अमेरिकी सीनेटर चुने गए.
5. फ्लोरिडा में **बायरन डोनाल्ड्स** पहले अश्वेत रिपब्लिकन गवर्नर बने.

इन मुद्दों पर जीते डेमोक्रेट्स

- अर्थव्यवस्था
- भ्रष्टाचार पर कार्रवाई
- विदेश नीति
- स्वास्थ्य सेवाएं
- प्रवासी नीति
- कर नीति



ट्रंप पर अब संसद का पहरा

जनवरी 2027 से डेमोक्रेटिक बहुमत वाली कांग्रेस ट्रंप प्रशासन के फैसलों की निगरानी करेगी. प्रतिनिधि सभा में समितियों, जांच और सरकारी अधिकारियों को तलब करने की ताकत विपक्ष के पास होगी. सीनेट में नियुक्तियों और विधायी फैसलों पर उसकी भूमिका बढ़ेगी. ईरान युद्ध, सरकारी खर्च, टैरिफ और प्रशासनिक फैसलों पर ट्रंप को संसद में चुनौती मिलेगी. राष्ट्रपति के वीटो अधिकार के कारण नीतियों में बदलाव आसान नहीं होगा, लेकिन अब एकतरफा फैसलों की राजनीतिक और संसदीय कीमत बढ़ेगी.

युद्ध के कारण हम हारे : वेंस

अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने मध्यावधि चुनाव में रिपब्लिकन पार्टी की हार के लिए ईरान युद्ध को प्रमुख वजह बताया है. वेंस ने कहा कि पार्टी के समर्थकों ने इस बार डेमोक्रेटिक उम्मीदवारों का साथ दिया. मतदाताओं की अपेक्षाएं थीं कि ईरान युद्ध खत्म किया जाए, महंगाई और जीवनयापन की लागत पर ध्यान दिया जाए, अमेरिका फर्स्ट की नीति अपनाई जाए और इजराइल के साथ संबंधों की समीक्षा हो. वेंस के मुताबिक, पार्टी की आर्थिक मुद्दों पर कमजोर रणनीति भी हार की वजह रही, लेकिन निर्णायक कारण युद्ध था.

रिपब्लिकन किलों में सेंध, टेक्सास ने चौंकाया

इस चुनाव का सबसे बड़ा उलटफेर टेक्सास में हुआ. करीब चार दशक से सीनेट चुनाव में डेमोक्रेट्स को जीत नहीं मिली थी. 1988 के बाद पहली बार डेमोक्रेट जेम्स तालारिको ने रिपब्लिकन उम्मीदवार केन पैक्सटन को हराकर इतिहास रचा. ट्रंप ने पैक्सटन का खुलकर समर्थन किया था, लेकिन मतदाताओं ने उनके समर्थन को जीत की गारंटी नहीं माना. साउथ कैरोलाइना में डेमोक्रेट एनी एंड्रयूज ने ट्रंप समर्थित डार्लिन ग्राहम को हराया. इस राज्य में 1998 के बाद डेमोक्रेट्स को सीनेट चुनाव में जीत नहीं मिली थी. कंसास में एडम हैमिल्टन ने रिपब्लिकन रोजर मार्शल को हराकर 94 साल का सूखा खत्म किया. यहां 1932 के बाद पहली बार डेमोक्रेट सीनेटर चुना गया. ओहायो में पूर्व सीनेटर शेरॉड ब्राउन ने रिपब्लिकन जॉन हस्टेड को पराजित किया, जबकि आयोवा में जोश ट्यूरेक ने एश्ले हिंसन को हराकर रिपब्लिकन सीट डेमोक्रेट्स के खाते में डाल दी. नॉर्थ कैरोलाइना में रॉय कूपर ने रिपब्लिकन माइकल व्हाटली को हराकर सीनेट सीट पर कब्जा किया. टेक्सास में सिर्फ सीनेट ही नहीं, राज्य की राजनीति में भी बड़ा उलटफेर हुआ. डेमोक्रेट जीना हिनोजोसा ने रिपब्लिकन गवर्नर ग्रेग एबॉट को हराया. यह जीत इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि टेक्सास को लंबे समय से रिपब्लिकन पार्टी का मजबूत आधार माना जाता रहा है.

ईवीएम छोड़ें, जनता के दिलों में जगह बनाएं राहुल: जेपी नड्डा

भोपाल में भाजपा की पदयात्रा में एक लाख से अधिक लोगों के जुटने का दावा



प्रशासनिक संवाददाता

भोपाल, 4 नवंबर. कांग्रेस को लोगों के दिलों में राज करना नहीं आता, इसलिए वह चुनाव में हार का ठीकरा ईवीएम और चुनाव आयोग पर फोड़ती है. राहुल गांधी को ईवीएम की चिंता छोड़कर आत्मचिंतन करना चाहिए. यह तीखा हमला केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा ने बुधवार को भोपाल में भाजपा की पदयात्रा से पहले आयोजित सभा में कांग्रेस पर किया. उन्होंने राहुल गांधी को अबोध बालक बताते हुए कहा कि चुनाव जीतना है तो जनता के दिलों में जगह बनानी होगी. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जनता के दिलों में बसे हैं, इसलिए प्रधान सेवक बनकर देश की सेवा कर रहे हैं.

'लोकतंत्र बचाओ, अराजकता हटाओ' संकल्प के तहत भाजपा की पदयात्रा अटल पथ से रोशनपुरा चौराहे तक निकाली गई. इसमें एक लाख से अधिक लोगों के शामिल होने का दावा किया गया. केंद्रीय मंत्री नड्डा के साथ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और भाजपा प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने भी पदयात्रा की अगुवाई की.

मतदाता सूची की शुद्धता जरूरी: नड्डा ने मतदाता सूची पुनरीक्षण का बचाव करते हुए कहा कि कांग्रेस 13 करोड़ नाम काटने का आरोप लगा रही है, जबकि अनुपस्थित, स्थानांतरित, मृत और दोहरी प्रविष्टियों वाले मतदाताओं की पहचान की जा रही है. मतदाता सूची को पारदर्शी बनाना लोकतंत्र की मजबूती के लिए जरूरी है.

परिवार की राजनीति करती है कांग्रेस : सीएम

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि कांग्रेस एक परिवार की सत्ता की राजनीति करती है. सत्ता से बाहर होने पर संवैधानिक संस्थाओं और लोकतंत्र को निशाना बनाती है. राहुल गांधी न्यायालय और निर्वाचन आयोग पर सवाल उठाकर राजनीति चमकाने का प्रयास कर रहे हैं. प्रदेश और देश की जनता कांग्रेस और विपक्षी दलों को माफ नहीं करेगी.

आरोप लगाकर भाग जाते हैं राहुल : खंडेलवाल

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने कहा कि एसआईआर पर सवाल उठाकर लोकतांत्रिक संस्थाओं को निशाना बनाने वाली कांग्रेस ने आरोपों के समर्थन में आज तक कोई सबूत नहीं दिए हैं. राहुल गांधी की राजनीति ही इस पर आधारित है कि आरोप लगाओ और भाग जाओ. कांग्रेस के नेतृत्व में विपक्ष देश में अराजकता फैलाने और पूरी दुनिया में भारत के लोकतंत्र की प्रतिष्ठा पर प्रश्नचिन्ह लगाने का प्रयास कर रहा है. कांग्रेस और राहुल गांधी मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण एसआईआर को लेकर लगातार सवाल उठा रहे हैं.

निर्मला किस दल की विधायक दो माह में करें तय

- **सुप्रीम कोर्ट ने विधानसभा अध्यक्ष को दिए निर्देश**

प्रशासनिक संवाददाता

भोपाल, 4 नवंबर. बीना से विधायक निर्मला सप्रे किस दल की विधायक हैं? इस बात का फैसला अब दो माह के भीतर हो जाएगा. सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को मप्र विधानसभा अध्यक्ष को निर्देश दिए हैं कि इस मामले में दो माह के भीतर फैसला करें.



निर्मला सप्रे पिछले विधानसभा चुनाव में कांग्रेस उम्मीदवार के रूप में विजयी हुई थीं, लेकिन नाटकीय मोड तब आया जब वे वर्ष 2024 में हुए लोकसभा चुनाव के दौरान भाजपा के मंच पर चली गई और भाजपा की सदस्यता ग्रहण कर ली थीं. तब से लेकर वे अब तक कांग्रेस से लगातार दूरी बनाकर रख रहीं थीं. हांलाकि उन्होंने न तो कांग्रेस से इस्तीफा दिया और न ही विधानसभा की सदस्यता से इस्तीफा दिया था. उसके बाद उनकी सदस्यता पर सवाल उठने लगे थे. नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने मामले में उनकी सदस्यता तय करने के लिए बार-बार अनुरोध विधानसभा अध्यक्ष के सामने किया, लेकिन निर्णय नहीं लिया.



